राज
कॉमिक्स विशेषांक
संख्या 0090
प्रलय
नागराज और सुपर कमांडो ध्रुव

हर वस्तु की तरह, संसार के भी जन्म के समय ही उसके विनाश का दिन भी तय हो गया था। इस दौरान कई भयंकर आपदाएं आईं और कई युद्ध हुए। लेकिन संसार हर बार बच गया। पर वह दिन कभी न कभी तो आना ही है। और शायद वह दिन आज ही है... क्योंकि आज राजनगर को अपना युद्धस्थल बनाकर मानव और नाग आपस में टकराने जा रहे हैं। और इन दोनों सेनाओं का नेतृत्व कर रहे हैं दो तूफान! मानवों का ध्रुव और नागों का नागराज—
मेरे मित्र नाग, राजनगर में जो कुछ भी करना चाहते हैं उन्हें वह करने दो ध्रुव! वर्ना संसार भर में प्रलय आ जाएगी!
ये नाग राजनगर में आतंक फैला रहे हैं। हर जगह ये लोग तोड़-फोड़ कर रहे हैं। और ऐसा करने का कोई कारण भी नहीं बता रहे हैं। हमने ऐसी परिस्थितियों के आगे झुकना नहीं सीखा है।...
...हम इन नागों को रोककर ही रहेंगे। ऐसा करने से अगर आ जाती है तो आ जाए...
प्रलय
कथा एवं चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विट्ठल कांबले
सुलेख व रंग: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता
©RAJA POCKET BOOK
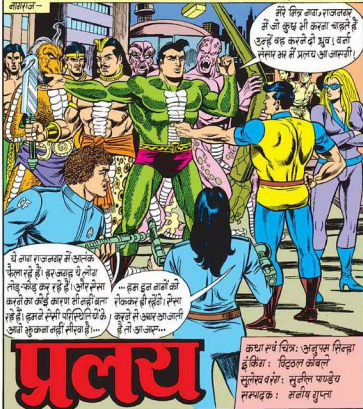
किसी भी मेट्रो शहर की रातें जितनी रंगीन होती हैं, उतनी ही खतरनाक भी होती हैं। क्योंकि रात के अंधेरे में डूबे सुनसान रास्तों पर कई शिकारी घात लगाकर बैठे हुए होते हैं।
आह!
महानगर भी ऐसी ही मेट्रो-सिटी है। इसीलिए यहां पर ऐसे दृश्य अकसर ही नजर आ जाते हैं। खून से लथपथ एक व्यक्ति अपनी जान बचाने को भाग रहा है, और उसकी जान लेने को उसका शिकारी पल-प्रतिपल अपने शिकार के पास आता जा रहा है। पर यह दृश्य कुछ अनोखा है-
क्योंकि दोनों में से कोई भी सामान्य मानव नजर नहीं आ रहा है-
अधिकतर लोग यह दृश्य देखकर खौफ खाने या भाग खड़े होने से ज्यादा और कुछ नहीं कर सकते। लेकिन महानगर की सड़कों पर घूमते कुछ प्राणी इससे कुछ ज्यादा करते हैं-
आ ऽऽऽ
वे तुरन्त अपने स्वामी को मानसिक संकेत भेजकर सूचित करते हैं-
और लगभग तुरन्त ही घटनास्थल पर पहुंच जाता है उनका स्वामी- नागराज। जिसने इस पृथ्वी से अपराध और आतंकवाद की जड़ से उखाड़ फेंकने की शपथ ली हुई है-
अरे! यह व्यक्ति तो बुरी तरह से घायल हो गया है।...
...पर...पर यह क्या? इसके शरीर में बदलाव आ रहा है। यह अपना रूप बदल रहा है।

हे देव कालजयी!
यह तो एक इच्छाधारी नाग है। और वेशभूषा से यह नागद्वीप का नाग लग रहा है।...
...इस पर हमला करने वाला भी इच्छाधारी नाग ही है। लेकिन ऐसे नाग को तो मैंने पहले कभी नहीं देखा!...
...खैर! यह बाद में सोचूंगा। पहले तो मुझे नागद्वीप वासी की जान बचानी है।
दूर हट!
तड़ाक
अरे! तुम तो विषपूत हो! महात्मा कालदूत के विश्वास-पात्र! तुम यहां पर क्या करने आए हो? और तुम पर यह विचित्र नाग हमला क्यों कर रहा है?
मैं... नागराज, का...कालदूत... नागद्वीप... द्वीप...
विषपूत अपनी बात पूरी नहीं कर सका-
क्योंकि उसी पल- उसके गले से आकर कुछ टकराया, और उसका गला पके फल की तरह फट पड़ा-
ओह! विषपूत, मुझे कुछ बता पाने से पहले ही शहीद हो गया। अब उसके अधूरे जवाब को पूरा करेगा उसका कातिल! यह विचित्र सर्प! मैं इसको भागने नहीं दूंगा।

परन्तु इसको काबू में कर पाना इतना आसान नहीं लगता है। विषपूत जैसे शक्तिशाली इच्छाधारी नाग को इसने जिस आसानी से खत्म कर दिया, वह कोई विलक्षण नाग ही कर सकता है।
अभी तक तो मैं यह भी नहीं समझ पाया कि इसने आखिरकार विषपूत को मारा कैसे है?
पहला वार नागराज ने ही किया-
इसको बहुत जल्दी काबू में करना पड़ेगा।
तड़ाक
लेकिन दूसरा वार कर पाने का मौका उसको मिल नहीं पाया-
धड़.
तेरी शक्ति के विषय में मैं जानता हूं नागराज! पर तू मानव है और मैं विषाश्व हूं। यानी विषाक्त अश्वनाग!
शारीरिक शक्ति में एक मानव, अश्व की बराबरी कभी नहीं कर सकता है।
और मेरी दूसरी शक्तियों के बारे में तो तूने कभी सुना ही नहीं होगा! ले! खा मेरे वार और चिल्ला!
ओह! यह अपने शरीर से जहर की पोटलियां छोड़ता है।...

लेकिन इसके जहर से मुझे कोई तकलीफ नहीं होगी...
...आह! इस जहर ने तो मुझे भी जला दिया है। पर कैसे?
सोचता रह नागराज! सोचता रह! शायद मरने से पहले तुझे कुछ समझ में आ जाए!
कटाक
इतना तो समझ में आ गया है, विषाक्ष कि विषपूत को तूने कैसे मारा था!...
... लेकिन अभी तक यह जानना बाकी है कि विषपूत को तूने क्यों मारा? अब या तो मुझे अपने-आप यह राज बता दे, या फिर मौत के बाद की दुनिया देखने के लिए तैयार हो जा!...
... वैसे तो एक आम आदमी इतनी मात्रा से मर जाता!... लेकिन...
...यह भी एक नाग है! इसलिए इसको काबू में करने के लिए मुझे विषफुंकार का अधिक मात्रा में प्रयोग करना होगा...
...अरे! यह तो मर गया! आश्चर्य है! ऐसा सर्प, जिसका जहर मुझ तक को जला दे, वह इतनी सी विष फुंकार से कैसे मर गया?

amaancoolduде18

बात जितनी दिखती है, उससे कहीं ज्यादा गहरी है। जरूर नागद्वीप या महात्मा कालदूत पर कोई मुसीबत आई है, जिसके बारे में मुझे बताने विषपूत यहां पर आया था... लेकिन उसको इस विचित्र सांप विषाश्व ने मार डाला! पर क्यों? इन सवालों का जवाब जानने के लिए मुझे नागद्वीप जाना ही होगा। पर वहां जाने से पहले मुझे अपने दुश्मन की ताकत को समझ लेना चाहिए।
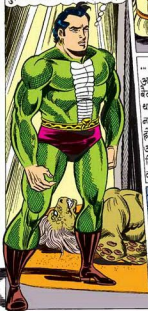
... पर अब तक न तो विषपूत वापस आया और न ही उसने कोई मानसिक संकेत भेजा है। मुझे तो अब चिन्ता हो रही है।

महात्मा कालदूत को खतरे का गलत आभास नहीं हो रहा था—

★ विषंधर नागद्वीप का राज तांत्रिक था। फिलहाल वह नागद्वीप में एक घोषित अपराधी है। विषंधर के विषय में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें – विषकन्या

amaancooldude8

नागराज, नागद्वीप पर जाने से पहले स्थिति को अच्छी तरह से समझ लेना चाहता था। और इसके लिए उसको कुछ सवालों के जवाब चाहिए थे-

जो उसको सिर्फ 'स्नेक पार्क' के डायरेक्टर डॉक्टर करुनाकरन से ही मिल सकते थे-★

ऐसा अद्भुत नाग सिर्फ तुम ही नहीं, मैं भी पहली बार देख रहा हूं नागराज! सांपों के जहर में मुख्यतः 'एल्केलायड' यानी क्षारीय तत्व होते हैं। ये तत्व जब किसी के खून में मिल जाते हैं तो इनके कारण दिल की धड़कन बन्द हो जाती है।

...संक्षेप में इतना समझ लो नागराज कि इस नाग की शक्ति तुम्हारी शक्ति की काट है। अगर तुम्हारे शरीर में बह रहे जहर को पॉजीटिव मान लिया जाए तो इसका जहर नेगेटिव होगा!...

★ विस्तार से जानने के लिए पढ़ें - स्नेक पार्क

लेकिन नागद्वीप पर मुसीबत टूट चुकी थी–
और यह मुसीबत एक-एक कदम बढ़ाते हुए महात्मा कालदूत की गुफा तक आ पहुंची थी–
आ ऽऽऽ ह!
महात्मा कालदूत एकाएक चौंक उठे–
अरे! यह आवाज कैसी थी?
कौन है वहां बाहर?
मैं हूं कालदूत...! हालांकि हम सैकड़ों साल बाद मिल रहे हैं।...
...फिर भी मुझे पूरा भरोसा है कि तुम मुझे अब तक भूले नहीं होगे।
सच है न कालदूत?
विषाला! तू यहां पर?
तू यहां तक कैसे पहुंच गई?

तुम्हारे नागद्वीप में कई गद्दार नाग हैं कालदूत! उनमें से ही एक नाग तांत्रिक विषंधर मुझसे टकरा गया। वह न जाने क्यों तुमसे बचकर कहीं सुरक्षित जगह पर छिपना चाहता था। उसी ने तुम्हारा जिक्र किया, और मुझे खुद यहां तक ले आया।

चलो! इतना तो तुमको सैकड़ों वर्षों बाद भी याद है!
लेकिन तुम्हारा यहां पर आने का मकसद क्या है?

सैकड़ों वर्ष पहले हम साथ थे कालदूत! तुमने हमारी जाति के साथ धोखा किया। मेरे साथ धोखा किया। मेरी जाति के सर्पों को नष्ट कर दिया। और वहां से तुम मेरी एक कीमती चीज भी उठा लाए थे!
मैं वही चीज वापस लेने आई हूं!

वह चीज तुम्हारी नहीं थी विषाला! और न ही तुम्हारे किसी काम की थी। और तुम्हारी जाति के सर्पों को नष्ट करके मुझे कोई खुशी नहीं हुई थी। लेकिन वे सर्प पृथ्वी से अन्य प्रजातियों का संहार करके खुद राज करना चाहते थे!
इसीलिए मुझे उनको मारना पड़ा। तुमको तुम्हारे एक सेवक के साथ मैंने सिर्फ इसलिए जिन्दा छोड़ दिया था, ताकि तुम्हारी जाति की विलुप्त प्रजातियों में गिनती न हो!
लेकिन अब मुझे लग रहा है कि तुमको जिन्दा छोड़कर मैंने एक बड़ी गलती कर दी थी।
तुम अभी भी अन्य प्राणियों के लिए एक खतरा हो। आज मैं विषाला नाम के खतरे को दूर करके ही रहूंगा!

ले विषाला, संभाल मेरी विष फुंकार को।
तुम भूल रहे हो कालदूत कि हमारी शक्तियां एक-दूसरे की विपरीत शक्तियां हैं।
तुम्हारी विष फुंकार को मेरी विष फुंकार निष्क्रिय कर देगी।
लेकिन पिछले डेढ़ सौ सालों में मैंने साधना के द्वारा जो शक्तियां प्राप्त की हैं, उनकी काट तुम्हारे पास भी नहीं है।
ले! मेरे 'विषअंगारों' को झेलकर दिखा!

amaanoodidude18

...और इस वक्त पाप, पुण्य पर भारी पड़ रहा है। मुझे इस महापुरुष की सहायता करनी होगी।
विषाला की शरीर तरंगों को अपने मस्तिष्क में रडार की तरह पकड़ते वेदाचार्य, विषाला की तरफ लपके—
और वेदाचार्य की तरफ से असावधान विषाला, भारी हथौड़े सा एक घूंसा खाकर पलट गई—
धाऽऽऽड़ड़ड़

इस व्यवधान ने कालदूत को बचाव करने का मौका दे दिया, क्योंकि उसकी गर्दनों पर कसे शिकंजे अब खुल चुके थे—
विषाला के अनुसार यह नर्क की अग्नि है। यानी इसको यज्ञ का अभिमंत्रित जल बुझा सकता है।...
...क्योंकि इस जल में देवों का आह्वान किया गया है।★
कालदूत को बचाने की प्रक्रिया में...
...वेदाचार्य ने अपने-आप को खतरे में डाल लिया था—
तूने विषाला पर वार करने की जुर्रत की है बूढ़े! मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगी!

★ आह्वान : बुलाया जाना

amaancooldude18

और एक बार फिर आमने-सामने खड़े हो गए, कालदूत और विषाला–

मैंने तेरी शक्तियों का सही मूल्यांकन नहीं किया था विषाला! तू पहले से भी अधिक शक्तिशाली और दुष्ट हो गई है।

आज मैं तेरे जीवन को यहीं समाप्त कर दूंगा।

विद्युत को भी मात कर देने वाली गति से लपका कालसर्पी–

और उसकी मजबूत कुंडली में कैद हो गई विषाला–

आह! यह मुझे अपनी कुंडली में कस कर पीस डालना चाहता है...

...लेकिन इसके ऐसा कर पाने से पहले ही मैं इसको अपने विष से गला डालूंगी।

ऐसा कर पाने से पहले ही तेरी जीवनलीला समाप्त हो जाएगी।

'चीरचला' अगर चल पाता तो विषाला को अवश्य ही चीर डालता–

अरे! यह क्या? यह तो तांत्रिक प्रहार था। कालदूत पर किसने यह प्रहार करने का साहस किया है?

मैंने कालदूत!

विषंधर! तूने मेरे सामने आने की हिम्मत कैसे की?

amaancooldude18

कहानी 19वें पृष्ठ से जारी

वाह! कमाल कर दिया आपने, देवी विषाला! कालदूत को परास्त कर दिया। मुझे तो अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा है।...
...मैं...मैं आज से नागद्वीप का राजा हूं। नागद्वीप का सबसे शक्तिशाली नाग!
अभी नहीं विषंधर! बिना मेरा काम पूरा किए तुम राजा नहीं बन सकते। आओ मेरे साथ!
हम जिस चीज की तलाश में हैं, उसको कालदूत जरूर गुफा के अन्दर ही रखता होगा!
विषंधर के साथ-साथ विषाला काल-दूत की गुफा के अंदर बढ़ती चली गई। जहां तक पहले कभी कोई नहीं गया था
तब तक, जब तक कि उसे वह चीज नहीं दिख गई, जिसकी उसे तलाश थी-
मिल गया! वह रहा अमर स्फटिक!
य...यह क्या है देवी?...
...ऐसी वस्तु तो मैंने पहले कभी नहीं देखी!
यह कालदूत की शक्ति का स्त्रोत है विषंधर! तुम्हें इसी को लेकर अंडमान स्थित मेरी बलि वेदी पर रखकर आना है।...
...क्योंकि इस स्फटिक को सिर्फ वहीं पर सुरक्षित रखा जा सकता है। अब जल्दी करो। अगर कोई नाग कालदूत से मिलने आ गया, तो मामला गड़बड़ हो जाएगा!
अपनी महान शक्तियों के बावजूद भी मैं पूरे नागद्वीप से एक साथ निबट नहीं सकती।
अब यह स्फटिक उठाओ, और यहां से निकल लो!

नागद्वीप से बाहर निकलने तक विषाला और विषंधर के सामने कोई अवरोध नहीं आया-
अब तुम यह स्फटिक लेकर तुरन्त मेरी गुफा की तरफ रवाना हो जाओ, विषंधर! वक्त बहुत कम है।
...वर्ना हमारी सारी योजना चौपट हो सकती है। अब जाओ!
योजना? इसकी योजना क्या है?
मैं निकल जाऊं? अकेला? आ... आप मेरे साथ नहीं आ रही हैं?
नहीं! मुझे यहीं पर रुकना होगा। क्योंकि अगर नागराज यहां तक पहुंच गया तो उसको नागद्वीप पहुंचकर कालदूत से मिलने से रोकना होगा!...
जाने दो! अगर पूछा तो कहीं क्रोध में यह मुझे ही न मार डाले!
विषाला की योजना से अंजान विषंधर अपनी तंत्र शक्ति से अंडमान की तरफ रवाना हो गया। पर उसकी बदकिस्मती से...
...नागद्वीप से अंडमान जाने का सबसे छोटा रास्ता राजनगर होकर ही जाता है-
और राजनगर में घुसने के बाद और निकलने से पहले हर अपराधी को एक चट्टान से टकराना पड़ता है। एक ऐसी अडिग चट्टान से जिसको आज तक अपराध की एक भी लहर पार नहीं कर पाई है। और वह चट्टान है...
...सुपर कमांडो ध्रुव-
राजनगर के सुनसान तटों से आजकल काफी तस्करी हो रही है। और 80 किलोमीटर लंबे तट पर कोई एक साथ नजर नहीं रख सकता... इसलिए मेरी कमांडो फोर्स ने राजनगर के सुनसान हिस्सों में एक-एक किलोमीटर की दूरी पर 'इलेक्ट्रॉनिक सेंसर' लगा दिए हैं, जो स्टीमर या जहाज जैसी किसी भी चीज के तट के नजदीक आते ही सिग्नल भेजने शुरू कर देंगे...
...अभी आ रहे ऐसे ही सिग्नल यह बता रहे हैं कि कोई शिप सेंसर नंबर 33 और 34 के बीच आकर रुकी है।...
टी टी टी टी
ठक
...अब समस्या सिर्फ एक ही है। तट का वह हिस्सा यहां से लगभग छः किलोमीटर दूर है। अगर मुझे दो मिनट से ज्यादा का वक्त लगा तो शायद शिकार मेरे हाथों से निकल जाएगा!

...मुझे 'शॉर्ट कट' से जाना होगा। तभी मैं वक्त पर वहां पहुंच पाऊंगा!
ध्रुव अपने अनोखे शॉर्ट-कट से राजनगर तट के एक खास सुनसान हिस्से की तरफ बढ़ रहा था-
लेकिन वह खास हिस्सा अब सुनसान नहीं था-
वेलकम रोड्स! कितना माल लाए हो आज?
दो हजार पीस! पांच सौ रुपए एक पीस का भाव है।
मंजूर है! माल उतारो!
लेकिन माल उतार पाने से पहले ही सन्नाटे में एक घड़घड़ाहट गूंज उठी
कोई आ रहा है, चुरू!
मोटरसाइकल की आवाज है। ज्यादा से ज्यादा दो पुलिस वाले होंगे!
घबराता क्यों है?
दो से तो निबट ही लेंगे!
दो नहीं, सिर्फ एक ही होगा चुरू! ध्यान से सुन...
...ये एक खास मोटर-साइकल की आवाज है...
...सुपर कमांडो ध्रुव आ रहा है!
सुपर कमीना बोल! अब जमा हुआ क्यों है? भाग!
भागने के लिए दोनों तस्कर तैयार तो हुए, लेकिन दिल ही दिल में वे दोनों ही यह बात जानते थे...
...कि वे भाग नहीं पाएंगे-
धड़ाक

पर इससे जहाज में बैठे तस्कर सावधान हो गए थे-
ओह! ग्राहक तो पिट गए, लेकिन दुकानदार भाग रहा है!...
...पर मैं बगैर यह देखे इनको जाने नहीं दूंगा कि आखिर ये बेचने क्या आए थे?
ए.के ४७, आर. डी. एक्स. और या फिर हेरोइन!
एक्सेलेटर के पूरे घुमाव ने ध्रुव को हवा में उछालकर...
...ठीक अपने लक्ष्य पर जा गिराया-
न... नहीं! मुझे मत मारना! मैं तो एक मामूली इंजिनमैन हूं। स्मगलर नहीं।
तो बताओ! क्या लेकर आए हो इस जहाज पर? नशीली चीजें या विस्फोटक?
दोनों में से कुछ भी नहीं। हम... ये लेकर आए थे।
मछलियां! मछलियों की तस्करी!
हां! पर ये मामूली मछलियां नहीं हैं। ये 'पिरान्हा' मछलियां हैं। ज्यादातर दक्षिणी अफ्रीका के समुद्रों में मिलती हैं।

ये खून की गंध से आकर्षित होती हैं, और भैंसे जितने बड़े प्राणी के पूरे मांस को कुछ ही मिनटों में चट कर सकती हैं।...
आजकल अपराध जगत में इनकी मांग बहुत बढ़ रही है। माफिया गैंग इनका इस्तेमाल अपने शिकारों की लाशों को चट करवाने में कर रहे हैं!
क्योंकि दुनिया भर का कानून तब तक किसी हत्या को साबित नहीं कर सकता, जब तक लाश न मिले!
और लाश मिलेगी कैसे, जब मांस को तो पिरान्हा चट कर जाएं और हड्डियों का चूरा बना दिया जाए।
ओह! राजनगर में कई लापता व्यक्तियों के न मिलने का एक कारण यह भी हो सकता है!
ठीक है! अगर तुम मेरी मदद करोगे, तो मैं तुमको सरकारी गवाह बनाकर सजा से बचा लूंगा!
आप जैसा कहेंगे मैं वैसा ही करूंगा साहब!
वैरी गुड! अब जहाज को किनारे ले...
...अरे! वह क्या है? तुम्हारा कोई आदमी है क्या?
हमारा आदमी!... नहीं तो... पर ये तो पानी पर चल रहा है!
कुछ गड़बड़ है! जहाज को इसके पास ले चलो...
...और इसको रोकने की कोशिश करो!
विषंधर का ध्यान जहाज की तरफ नहीं था-
यहां तक आने में मैं अपनी काफी तंत्र शक्ति खर्च कर चुका हूं। पर अब जमीन पर बिना तंत्र शक्ति के काम चल जाएगा।...
...तट पर एक गाड़ी खड़ी दिख रही है। इसको कब्जे में करके मैं इसके जरिए ही जमीन को पार करके बंगाल की खाड़ी तक पहुंच जाऊंगा। और फिर विषाला की गुफा तक पहुंचना मामूली काम है।

फिलहाल तो विषंधर के लिए अरब सागर की पार करना ही मुश्किल होने वाला था-
अरे! यह क्या? यह जलयान मेरा रास्ता क्यों रोकना चाहता है?
मेरे रास्ते से हट जा लड़के! अपनी आयु की रेखा को बीच में ही क्यों काट देना चाहता है?
हट जाऊंगा! लेकिन यह जानने के बाद कि तुम कौन हो, कहां जा रहे हो और तुम्हारे हाथ में यह क्या है?
मेरे बाएं हाथ में क्या है, यह जानने की तुझे कोई जरूरत नहीं है लड़के!...
...क्योंकि मेरे दाएं हाथ में तेरी मौत है।
ओह! यह तो कोई तांत्रिक लगता है।
और अपने मंत्रदंड से यह मुझ पर घातक वार कर रहा है।
अब मैं इस जलयान को ही तोड़... अरे, यह मैं क्या मूर्खता कर रहा हूं? अगर मैं इस जलयान को अपने कब्जे में ले लूं तो मैं इसके द्वारा ही अंडमान द्वीप समूह तक पहुंच सकता हूं।...
...और ऐसा करने से मैं भूमि पर आने वाली रुकावटों से भी बच जाऊंगा... मैं अभी इस लड़के को खत्म कर देता हूं।

वैसे भी मेरे पास अब बहुत थोड़ी सी तंत्र शक्ति बची है।
इस जलयान की हथियाने में मैं और तंत्र शक्ति खर्च करने से बच जाऊंगा।
घम म
ध्रुव को विषंधर की शक्तियों का अंदाजा नहीं था-
और जब तक उसको यह अंदाजा लग पाता, तब तक बहुत देर हो चुकी थी-
कड़ंड़ंगाक
आऽऽऽह! यह तो सचमुच में तंत्र शक्ति के वार कर रहा है। ठीक वैसे ही, जैसे कुछ वर्ष पहले चंडकाल ने मुझ पर किए थे, और मैंने उसके मंत्रदंड को उसके हाथों से गिरवाकर उस पर काबू पाया था!
पढ़ें: किरीगी का कहर
इन तांत्रिक महाशय पर भी वही तरकीब आजमानी पड़ेगी!
विषंधर के ही तांत्रिक वार से टूटे लकड़ी के टुकड़े ने, विषंधर को अपना मंत्रदंड गिराने पर मजबूर कर दिया-
आऽऽऽह!
और अगले ही पल मंत्रदंड समुद्र में जा गिरा-

amarcomicbuzz

amarcomics.de

और ध्रुव को बांधने वाली रस्सियों में से तांत्रिक असर खत्म हो गया-

इसकी तंत्र शक्ति का संपर्क इन बंधनों से टूट गया है।

अब ध्रुव के लिए उनको तोड़ पाना मामूली सी बात थी-

ठीक वैसा ही हुआ, जैसा मैंने सोचा था।

वैसे तो मैं किसी भी इंसान को पिरान्हा मछलियों के बीच में न फेंकता...

...लेकिन यह एक तांत्रिक है। पिरान्हा इसको घायल तो कर सकती हैं, पर जान से नहीं मार सकतीं!

ध्रुव की सोच एकदम सही थी-
आऽऽह! इन मछलियों ने तो कुछ ही पलों में मेरे शरीर को क्षत-विक्षत कर डाला है। अब मुझे इनको एक साथ खत्म करने के लिए अपनी बची-खुची तंत्र शक्ति का एक बड़ा हिस्सा खर्च करना ही होगा।
तंत्र-ऊर्जा के एक तेज झटके ने पिरान्हा मछलियों को तो खत्म कर दिया-
लेकिन विषंधर को भी सोचने के लिए मजबूर कर दिया-
मेरा पहला काम इस स्फटिक को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाना है।...
...इसलिए मुझे यहां से चुपचाप निकल जाना होगा।
क्योंकि इस वक्त मैं किसी का भी सामना करने की स्थिति में नहीं हूं।
मैंने उस लड़के को एक मामूली मानव समझा था। पर उसने मेरा मंत्रदंड समुद्र में फेंक दिया...
...मुझे बची-खुची ऊर्जा को खर्च करने पर मजबूर कर दिया। लेकिन मैंने भी अपना बदला ले लिया। अब तक मेरे तांत्रिक बाजू बंधन...
...उस लड़के के प्राण निकाल...
अरे! यह बच गया।
अब समझा! जब पिरान्हा मछलियों पर मैं तंत्र शक्ति का प्रयोग कर रहा था तो इन बंधनों से मेरा संपर्क टूट गया होगा!
शायद इस लड़के ने मुझे पिरान्हा के बीच में इसीलिए गिराया था। इसका दिमाग तो खतरनाक रूप से तेज है।
इसलिए जितनी जल्दी हो सके, इससे दूर निकल जाना चाहिए!
अरे! अरे! यह भाग रहा है। इंजिन मैन, जहाज को फिर इसके पीछे ले चलो!

★ ध्रुव कई अन्य पशु-पक्षियों, जीव-जन्तुओं से बातचीत करने की क्षमता भी रखता है।

साथ ही साथ-'अमर स्फटिक' भी उसके हाथों से छूटकर, राजनगर तट से लगी चट्टानों के बीच में गिरकर गुम हो गया-
ठक
स्फटिक के साथ-साथ विषंधर के होश भी गुम हो गए-
य... यह क्या हुआ? इन चट्टानों के बीच में से तो मैं स्फटिक को कभी ढूंढ नहीं पाऊंगा! अगर मेरी तंत्र-शक्तियां पूरे जोर पर होतीं तो शायद मैं स्फटिक को ढूंढ भी लेता...
...लेकिन अब तो यह काम असंभव लगता है!...
...देवी विषाला इस गलती के लिए मुझे जान से मार डालेगी!
अब तो एक ही रास्ता समझ में आता है!...
...और वह यह कि मैं अपनी बची-खुची तंत्र शक्ति को प्रयोग में लाकर यहां से अदृश्य हो जाऊं, और फिर छिपने की कोई सुरक्षित जगह ढूंढूं!
अरे, यह क्या? यह तो गायब हो रहा है!
आखिर यह सब चक्कर था क्या? कौन था यह विषंधर? और यह उस चमकती मणि को लेकर कहां जा रहा था?
अभी तो इन स्मगलरों को पुलिस के हवाले कर दूं! फिर इस घटना पर विचार करूंगा!
खैर, हवा में सिर मारने से कोई फायदा नहीं होगा!
इस घटना पर विचार नागद्वीप में चल रहा था-
हमारी शक्तियां फिर से संयुक्त रूप बनाने में व्यय होकर क्षीण हो गई हैं...

emasnoodkuuke8
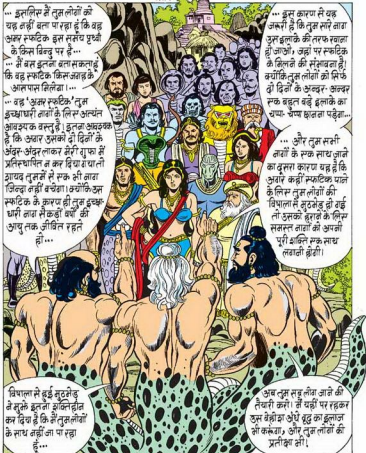
... इसलिए मैं तुम लोगों को यह नहीं बता पा रहा हूं कि वह अमर स्फटिक इस समय पृथ्वी के किस बिन्दु पर है...

... मैं बस इतना बता सकता हूं कि वह स्फटिक किस जगह के आसपास मिलेगा।...

... वह 'अमर स्फटिक' तुम इच्छाधारी नागों के लिए अत्यंत आवश्यक वस्तु है। इतना आवश्यक है कि अगर उसको दो दिनों के अंदर-अंदर लाकर मेरी गुफा में प्रतिस्थापित न कर दिया गया तो शायद तुममें से एक भी नाग जिन्दा नहीं बचेगा। क्योंकि उस स्फटिक के कारण ही तुम इच्छाधारी नाग सैकड़ों वर्षों की आयु तक जीवित रहते हो...

... इस कारण से यह जरूरी है कि तुम सारे नाग उस इलाके की तरफ रवाना हो जाओ, जहां पर स्फटिक के मिलने की संभावना है। क्योंकि तुम लोगों को सिर्फ दो दिनों के अन्दर-अन्दर एक बहुत बड़े इलाके का चप्पा-चप्पा छानना पड़ेगा...

... और तुम सभी नागों के एक साथ जाने का दूसरा कारण यह है कि अगर कहीं स्फटिक पाने के लिए तुम लोगों की विषाला से मुठभेड़ हो गई तो उसको हराने के लिए समस्त नागों को अपनी पूरी शक्ति एक साथ लगानी होगी।

विषाला से हुई मुठभेड़ ने मुझे इतना शक्तिहीन कर दिया है कि मैं तुम लोगों के साथ नहीं जा पा रहा हूं...

अब तुम सब लोग जाने की तैयारी करो। मैं यहीं पर रहकर उस बेहोश अंधे वृद्ध का इलाज भी करूंगा, और तुम लोगों की प्रतीक्षा भी।

लगभग इसी वक्त नागराज, अपने दिमाग में घुमड़ते सवालों का जवाब पाने के लिए, नागद्वीप की तरफ बढ़ रहा था-
मेरी जल सर्पों से बनी यह अनोखी सर्प नौका, मुझे अब थोड़ी ही देर में नागद्वीप तक पहुंचा देगी...
...तभी मुझे पता चल पायगा कि नागद्वीप में मेरा प्रवेश निषिद्ध करने के बावजूद भी महात्मा कालदूत ने मुझे क्यों याद किया है!
नागद्वीप, वैसे तो नागराज की अपनी आंखों के सामने दिखाई दे रहा था-
परन्तु वहां तक पहुंच पाना नागराज की किस्मत में नहीं था-
अरे! यह क्या हो रहा है! नौका टूट रही है...
...मेरे नाग तड़प रहे हैं! पर क्यों?
शीघ्र ही नागराज, पानी से बाहर निकल आया-
यह चक्कर क्या है? समुद्र का पानी जलन क्यों दे रहा है?
मेरे विष के कारण, नागराज!
तुमको रोकने के लिए यहां के जल में मुझे अपना विष मिलाना पड़ा!
विष मिलाना पड़ा? पर क्यों?
और तुम हो कौन?
पानी में डुबकी लगाते ही, नागराज को जवाब मिल गया-
आऽऽऽह! पानी का स्पर्श होते ही मेरे शरीर में तेज जलन होने लगी है...
... मुझे पानी से तुरन्त बाहर निकलना होगा!

वैसे तो मेरे गुलाम मुझे देवी विषाला कहते हैं। पर तुम मुझे अपनी मौत कह सकते हो नागराज!
मैं यहां पर तुम्हारा ही इंतजार कर रही थी। तुम्हारे यहां पर आने से यह स्पष्ट हो गया है कि विषाश्व तुमसे टकराकर अपने प्राण खो बैठा है।
ओह! यानी विषपुत्र के हत्यारे विषाश्व को तुमने ही भेजा था! तब तो महात्मा कालदूत ने मुझे सन्देश तुम्हारे बारे में ही भेजा होगा!
हुम! वह संदेश तो किसी और संबंध में था... खैर अब उस बारे में बात करने से क्या फायदा...
... क्योंकि अब तो तेरा इस दुनिया से विदाई का समय आ गया है!
तेरी बात सच हो सकती थी, विषाला...
...पर अगर मैं विषाश्व से न टकराया होता, तब! विषाश्व के जरिए मुझे तो विपरीत विष शक्तियों का आभास हो चुका है!...
फटऽऽऽऽाककक
...लेकिन तुझे नागराज की शक्तियों का अन्दाजा नहीं है विषाला!

नागराज एक अकेला मानव नहीं, बल्कि एक पूरी सर्प सेना है। देखते हैं कि तू अपने विपरीत विष से मेरे कितने नागों को रोक सकती है!

नागराज ने अपनी कलाइयों से सैकड़ों विषधरों को एक साथ विषाला की तरफ छोड़ दिया-

यह तो सच है कि मैं इन सारे नागों को रोक नहीं पाऊंगी। कुछ नाग मुझे काटने में जरूर सफल हो जाएंगे...

...और इनके काटने से मेरे शरीर का थोड़ा सा विष, पानी बन जाएगा, क्योंकि इनमें भी मेरे विष का विपरीत विष मौजूद है...

...इसलिए मैं तेरे नागों को कहीं और पहुंचाने का इन्तजाम कर देती हूं। इस विशाल एनाकोंडा के पेट में!

पहले तो यह विशाल अजगर तेरे सांपों को खींचकर उनको अपना भोजन बनाएगा...

...और फिर तुझको भी अपने पेट में डाल लेगा!

आऽऽह! इस अजगर की तो पकड़ वाकई बहुत मजबूत है।...

...ऐसे तो यह कुछ ही पलों में मेरी हड्डियों का सुरमा बना डालेगा...

...इसकी जकड़ से जल्दी ही बाहर निकलना होगा। पर कैसे? मेरी शारीरिक शक्ति तो इस दैत्य की ताकत के सामने बेकार है...

...और इसके विशालकाय शरीर में इतना 'नेगेटिव विष' भरा होगा कि मेरा विषदंश भी इसका कुछ बिगाड़ नहीं पाएगा...

नागराज, एनाकोंडा के भारी भरकम शरीर को लिए हुए चट्टानों पर आ गिरा-

खचाक

चिंयांयांयां!

...अब शायद ये चट्टानें ही मेरी मदद कर सकती हैं...

और एक नुकीली चट्टान, अजगर के शरीर में पैवस्त हो गई-

amaanoodude8

यह तो शायद तेरी किस्मत अच्छी है कि फिलहाल मेरी तंत्र शक्तियां और इच्छाधारी शक्ति कालदूत की शक्तियों को निष्क्रिय करने में व्यय हो गई हैं। लेकिन फिर भी मेरी मामूली शक्तियां भी तुझको समाप्त करने में सक्षम हैं...

...ये मेरे 'तंत्र बुले' देखने में तुझे साबुन के मामूली बुलबुलों से जरूर लगेंगे। लेकिन किसी भी चीज से स्पर्श होते ही...

...जो तेरे चिथड़े उड़ा देने को काफी है!

...ये 'विस्फोट' के साथ फटते हैं!

एक हथगोले जितने शक्तिशाली विस्फोट के साथ!...

बडाम

यह सही कह रही है! देर-सवेर कोई न कोई तंत्र बुला मेरे शरीर को फाड़ ही डालेगा...

...विषाला पर हमला करके इसको और तंत्र बुले बनाने से रोकना होगा। लेकिन इस पर सीधे हमला कर पाना असंभव है। इसलिए इस पर दूसरी तरफ से हमला करना होगा।

नागराज की उस जोरदार टक्कर से नारियल का पेड़ बुरी तरह से हिल उठा। और नारियलों का झुंड सीधे पेड़ के नीचे खड़ी विषाला की खोपड़ी की तरफ लपक गया-
तड़.
ता
ड़.
...नागराज एक चट्टान को उसकी तरफ लुढ़का चुका था-
अब मैं तुझको काबू में करने के लिए तुझ पर अपने विषदंश का प्रयोग करूंगा...
और विषाला के इस झटके से उबर पाने के पहले ही...
... जो आम इन्सान या पशु के शरीर को गला देता है।
तुझ पर भी इसका कुछ तो असर होगा ही होगा!
विषाला पर नागराज के तेज जहर का असर तुरन्त ही हो गया-
आह! तेरा विष तो कालदूत के विष से भी तेज है!
मुझ पर नशा सा छा रहा है।
किसी भी नाग या मानव के अन्दर इतना तेज जहर पैदा हो पाना संभव नहीं है। यह जरूर किसी देव का विष है।
कड़
ड़.
ड़.
इसीलिए अब मैं तुझे जान से नहीं मारूंगी।...

... तुझे बन्दी बनाकर रखूंगी। ताकि जब नागद्वीप के इच्छाधारी नागों को समाप्त करने के बाद मैं गरलगंट की आराधना करूं तो उसमें तेरी बलि चढ़ाऊं!
मुझको समाप्त कर पाना तो शायद तेरे लिए संभव है विषाला! परन्तु मुझे बन्दी बनाकर न तो तू रख सकती है, और न ही तेरा कोई अस्त्र।
कड़ाक
मेरा अस्त्र न सही...
...लेकिन कालदूत का अस्त्र तो तुझे बन्दी बना सकता है न नागराज!
कालसर्पी! जा!
कालसर्पी! तेरे पास?
हां! कालदूत से युद्ध के दौरान, यह मेरे विष से गलकर दो टुकड़ों में टूटने के बाद मृत हो गई थी...
... इसको दुबारा जीवन मैंने दिया। इसीलिए इसकी शक्तियां चाहे पहले जैसी ही हों, लेकिन अब यह मेरी गुलाम है।...
...और तुम्हारी दुश्मन!

किसी भ्रम में मत रहना विषाला! नागराज के पास ऐसे हथियार हैं जो कालसर्पी को भी काट सकते हैं।

मैं जानती हूं कि वे हथियार तेरे शरीर में वास करने वाले भिन्न भिन्न प्रकार के सर्प हैं। इसलिए मैं ऐसा इन्तजाम करके जाऊंगी...

अब मैं जा रही हूं! क्योंकि इस वक्त मुझे कहीं और होना है...

...पर तुझे ज्यादा इन्तजार नहीं करना पड़ेगा! मैं जल्दी ही वापस आ जाऊंगी!

नागराज, फिलहाल तो नागद्वीप के पास चट्टानों के ढेर पर खड़े नारियलों के पेड़ से बंधा था...

...लेकिन जल्दी ही राजनगर में होने वाले एक अजीबो-गरीब घटनाक्रम में शामिल होने वाला था–

amaancool dude18

...इसीलिए इस पर पहला हक महानगर पुलिस का है। और उन्होंने इसको वापस ले आने की जिम्मेदारी मुझको सौंपी है! इसको मेरे हवाले कर दो!

यह मैं कैसे कर सकता हूं, नागराज? मैंने इसको खून करते हुए रंगे हाथों पकड़ा है। मैं इसकी रिपोर्ट दर्ज कराके पुलिस के हवाले कर दूंगा। और फिर वहां से आवश्यक खानापूरी करके तुम इसको ले जा सकते हो!

तुम बात को समझ नहीं रहे हो ध्रुव! इस अपराधी को आज सुबह नौ बजे तक अदालत के सामने पेश करना बहुत जरूरी है।

वर्ना कानूनी अड़चनों की वजह से यह छूट जाएगा और फिर इस पर केस दायर नहीं किया जा सकेगा!

अगर मैं इसको राजनगर पुलिस थाने से ले जाने के चक्कर में रहा तो मैं कभी भी वक्त पर महानगर नहीं पहुंच पाऊंगा...

सांप?... ओह! मैं सपना देख रहा था!
बड़ा अजीब सा सपना था! नागराज और मैं ऐसी बात पर झगड़ ही नहीं सकते!

भविष्य में अगर कभी मेरा और नागराज का टकराव हो ही गया तो मैं नागराज की शक्तियों का सामना नहीं कर पाऊंगा।...
...मुझे ऐसी स्थिति के लिए तैयार हो जाना चाहिए। और उसके लिए मुझे खुद कुछ तैयारी करनी होगी...

ध्रुव की छठी इंद्रिय संकेत तो सही दे रही थी, लेकिन वह वक्त अभी थोड़ा दूर था-

लगभग सत्रह-अठारह घंटे दूर-

amaancooldude18

★ पढ़ें : विषकन्या

और हमें आपसे इस बात के लिए क्षमा भी मांगनी है कि आप पर हमला करने वाला दुष्टतांत्रिक भी हमारे नागद्वीप का ही एक इच्छाधारी नाग है...

... मैं कालदूत हूं! इस नागद्वीप का मुखिया मान सकते हैं आप मुझको! परन्तु आपका यहां तक आने का क्या अभिप्राय था?

... और आपकी शरीर तरंगें मुझे इस बात का आभास दे रही हैं कि अभी आप थोड़े विचलित भी हैं और घायल भी! साथ ही साथ यहां कहीं भी आस-पास से मुझे और किसी प्राणी के शरीर तरंगों का आभास नहीं हो रहा है...

यह तो मैं आपको बताऊंगा ही मान्यवर...

... मैं वेदाचार्य अन्धा अवश्य हूं! परन्तु मेरे अन्दर दूसरों की शरीर तरंगों को ग्रहण करने की अदभुत क्षमता मौजूद है!...

... अभी-अभी आपने बताया कि आप मुखिया हैं! यानी इस द्वीप पर और कई प्राणी वास करते हैं!

वे सब कहां हैं और आप घायल क्यों हैं? अगर उचित समझें तो मुझे बताएं!

महात्मा कालदूत यह तुरंत समझ गए कि अपनी याददाश्त वापस आते ही वेदाचार्य के मस्तिष्क से बीच की सारी यादें मिट चुकी हैं। विषाला से कालदूत के टकराव की याद भी। उन्होंने वेदाचार्य को सारा घटनाक्रम समझा दिया-

और सारे नाग उसी वस्तु की तलाश में गए हैं, जिसे विषाला यहां से उठा ले गई है!

ओह! परन्तु ये आपकी चिन्ता का कारण तो नहीं हो सकता!

नहीं, वेदाचार्य! हमारी चिन्ता दूसरे कारण से है। हम इस वक्त द्वीप पर अकेले हैं! और हमारी शक्तियां क्षीण हैं! अगर कहीं विषाला आ गई तो हम अकेले नागद्वीप की रक्षा नहीं कर पाएंगे!

ओह! तब तो मेरे पास आपकी चिन्ता का समाधान है! मैंने अपने समय में कई तिलिस्मों की रचना की है मान्यवर! मैं इस द्वीप को अपने तंत्रों द्वारा इस प्रकार से सुरक्षित कर सकता हूं कि बाहर का कोई भी व्यक्ति यहां द्वीप में घुस ही न सके!

amarcomics.ucoz

amaancoolduded8

दूरदर्शन पर स्पेशल लोकल बुलेटिन प्रसारित होने लगे–

अब तक सोलह स्थानों से ऐसे अजीब सांपों के देखे जाने के समाचार आए हैं...

लेकिन हर मिनट नए स्थानों से भी ऐसी सूचनाएं आ रही हैं।

रात की गश्त पर निकले सुपर कमांडो ध्रुव की मोटरसाइकल में लगा पुलिस बैंड ट्रांसमीटर हर सूचना को ध्रुव तक पहुंचा रहा था–

अचानक यह क्या होने लगा है, इतने सारे सर्पमानव राजनगर में कहां से आ गए? मुझे नागराज की मदद लेनी होगी... भारती के जरिए नागराज को यहां पर बुलाया जा सकता है।

लेकिन ध्रुव को भारती से कोई मदद नहीं मिली–

मैं भी नागराज को ही ढूंढ रही हूं ध्रुव! लेकिन कल शाम से ही उसका कोई पता नहीं है।

पर तुम चिन्ता मत करो! वह जहां पर भी होगा इस सूचना को सुनकर तुरंत राजनगर पहुंच जाएगा!

ओफ्! यह नागराज इस मुसीबत के समय में कहां गायब हो गया...

पांच खतरनाक नाग मिल्ट्री बेस के आस-पास तोड़-फोड़ मचा रहे हैं... सभी पुलिस वैन...

ओह! इन्होंने मिल्ट्री तक को नहीं छोड़ा! मुझे तुरन्त मिल्ट्री बेस पहुंचना होगा...

★ इन पांचों के बारे में जानने के लिए पढ़ें : नगीना का जाल

इसलिए टकराव तो निश्चित ही था-
और पहला वार नागों की तरफ से ही होना था, क्योंकि रास्ते की रुकावट तो उनको ही हटानी थी-
सांय सांय
कड़ाक
बन्दूकें गिराने का काम नागार्जुन के गांडीव...
...और सर्पराज की गदा भुमंडा ने किया-
और उसके बाद तो कोई भी पीछे नहीं रहा-
खचाक
आssss ह!
नागदेव ने अपनी दाढ़ी का भरपूर इस्तेमाल किया-
मेरी दाढ़ी का शिकंजा तुम्हें बेहोश होने के बाद ही छोड़ेगा!
और नागप्रेती ने बंदूकों और पिस्तौलों से अपने पेट को भरने का काम किया-
कड़न्च! आह!
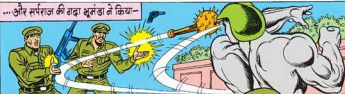
चलो! अब स्फटिक को ढूंढें! महात्मा कालदूत ने हमको बताया है कि स्फटिक से पांच कदम के घेरे में आते ही हमको स्फटिक का आभास हो जाएगा।
इसलिए जो भी चीज हमारा रास्ता रोके, उसको हटा दो।
लेकिन सर्पमानव यह नहीं जानते थे कि इस वक्त वह सेना के इलाके में थे-
हमको रास्ते से हटना नहीं, हटाना आता है सर्पमानव!
क्योंकि हम सैनिक हैं! देश पर मर मिटने वाले सैनिक!...
...फायर!
तोप का गोला, पांचों सर्प सैनिकों के चिथड़े उड़ाने के लिए दगा तो जरूर...
बड़ाम
...परन्तु चिथड़े उनके नहीं बल्कि उनके पीछे वाली बाउंड्रीवॉल के उड़ गए-
क्योंकि उसी पल पांचों सर्परूप में आ चुके थे-

सर्परूप की छोड़ने में भी पांचों की पलभर का वक्त लगा-
और भूमंडा ने टैंक के टुकड़े कर दिए-
कड़कड़
क्रोधित नागार्जुन के बाण, स्तब्ध सैनिकों के सिर उड़ा देने को लपके-
लेकिन रास्ते में ही रोक लिए गए-
सुपर कमांडो ध्रुव सैनिकों के लिए भगवान का अवतार बनकर आ गया था-
मैं नागराज के मित्र के नाते तुमसे यह तोड़फोड़ बंद करके मुझे यह बताने की विनती करता हूं कि आखिर तुम यह सब क्यों कर रहे हो?
हम विवश हैं ध्रुव। हम न तो यह तोड़-फोड़ बन्द कर सकते हैं और न ही तुमको कुछ बता सकते हैं।
नागार्जुन के बाणों की गति की बराबरी कर सकने वाला मानव साधारण नहीं हो सकता। कौन हो तुम?
धम्म धम्म
मेरा नाम ध्रुव है, नाग मानव! और मैं नागराज का मित्र हूं। नागराज को तो तुम अवश्य ही जानते होगे।
तो फिर मैं भी तुमको रोकने के लिए विवश हूं। अगर प्यार से नहीं तो ताकत से!

तुम हमको रोकोगे? हम पांच पूरी पृथ्वी का अकेले सामना कर सकते हैं। तू पहले नागार्जुन के बाणों की वर्षा से बचकर दिखा। फिर बाकी चार योद्धाओं से निबटने की सोचना!
टंकु टंकु
टंकु टंकु
सांय सांय सांय सांय
नाग यह नहीं जानते थे कि उनका सामना सुपर कमांडो ध्रुव से था। किसी मामूली मानव से नहीं—
चलो! अलग-अलग दिशाओं में फैलकर तलाशी चालू कर दो! इस दूध पीते बच्चे को नागार्जुन कुछ ही पलों में प्राण हीन कर देगा!
लेकिन ध्रुव को प्राणहीन कर पाना इतना आसान नहीं था—
ठन्न
टन्न
खट
ठक
टैंक की यह मोटे लोहे की चादर मुझे नागार्जुन के बाणों से ढाल की तरह बचाएगी भी...
...और इसके धनुष को तोड़ेगी भी!
ठन्नाक
हाहाहा! नागार्जुन के हाथों में अर्जुन का गांडीव है, ध्रुव! ऐसे वारों से तो इस पर खरोंच तक नहीं आएगी!
अब मैं तुझे दिव्य बाणों की शक्ति दिखाता हूं।
सबसे पहले दैरव... व्यवस्त्र की शक्ति!...

...जिसकी तीव्र वायु शक्ति, तुझको लट्टू की तरह नचा डालेगी।
घम्म्म
और अब बच मेरे आग्नेयास्त्र से।
फ्क्क
ऐसे दो तीन और तीरों से तो मेरी जीवन-नैया भवसागर को पार कर जाएगी। इसके अस्त्रों को बेकार करना पड़ेगा। इस पौराणिक धनुष गांडीव पर तो शायद एटम बम भी असर न करे, लेकिन एक चीज है, जिस पर मैं वार करने की कोशिश कर सकता हूं।
अरे! तू अपनी हरकतों से बाज नहीं आएगा! मैं तुझको बता चुका हूं कि तेरा कोई भी हथियार मेरे धनुष पर बेकार है।
धनुष पर तो मैं वार कर भी नहीं रहा हूं नागार्जुन...
...मेरा निशाना तो तेरे धनुष की डोरी है। और जब तक तुम धनुष पर दूसरी डोर चढ़ा पाओगे...

...तब तक मैं तुमको बेहोशी की दुनिया में पहुंचा दूंगा...
नाजुक स्थान पर हुए वार को नागार्जुन सह नहीं सका-
तड़ाक
यह धनुर्धारी नाग तो गया। अब जरा दूसरों की भी खबर ली जाए।
21 sb. BATIALION
कड़ाक
सर्पराज की गदा भूमण्डा अपना कहर बरसा रही थी-
यह मशीनी यंत्र हटाकर देखा जाए। शायद स्टफिक यहीं कहीं पर हो।
नहीं! मुझे आभास नहीं हो रहा है। स्टफिक यहां पर नहीं...
आऽऽह!
धम्म
म
तूने...तूने सर्पराज पर पैर उठाने की जुर्रत की। जिसकी गदा भूमण्डा पहाड़ों को भी चूर-चूर करके रेगिस्तान में बदल सकती है...

...तो सोच कि ये तेरे शरीर का क्या हाल करेगी!
ओह! इसकी गदा तो बहुत तेज गति से मेरी तरफ आ रही है! मुझको आखिरी वक्त तक इंतजार करना पड़ेगा...
...ताकि मैं इस प्रलयं-कारी गदा के रास्ते से अलग हट सकूं!
ध्रुव तो गदा के रास्ते से अलग हट गया। लेकिन गदा पीछे की चारदीवारी को तोड़ती हुई...
कड़ाक
...वापस सर्पराज के हाथ में जा पहुंची-
ओह! इसकी गदा तोड़-फोड़ करके वापस इसके हाथ में पहुंच जाती है! यह इस शक्ति को अपनी ताकत समझता है...
...लेकिन मैं इसकी इसी ताकत को इसकी कमजोरी बना सकता हूं!
बड़ा कच्चा निशाना है तुम्हारा सर्पराज! फिर से कोशिश करके देखो!
इस बार तेरा सिर फूटने से नहीं बचेगा, ध्रुव! ले संभाल!

सर्पराज की गदा इस बार ध्रुव की गर्दन को छूती हुई निकली-
आऽऽह! इस बार अगर मैं चूक गया तो अगला वार मेरी खोपड़ी को कुचल ही डालेगा...
खणक
...गदा मुझ पर वार करने के बाद वापस सर्पराज की तरफ बढ़ रही है। अब अगर मैं स्टार लाइन को इसमें फंसाकर इस गदा को एक ऐसा झटका दूं...
...कि इसके हाथ की तरफ बढ़ती गदा इसके मुंह से जा टकराए...
...तो मेरा काम बन जाएगा।
धड़ाक
आऽऽह!
उसकी आवश्यकता नहीं है, बच्चे! सर्पराज की चीख सुन कर नागदेव और नागप्रेती आ गए हैं। और हम तुम्हें जिन्दा नहीं छोड़ेंगे। गरुड़दण्ड, मार इसको!
बन गया काम सर्पराज! अपनी ही गदा का वार सह नहीं सका! अब जरा बाकी तीनों का हालचाल ले लिया जाए!
नागदेव का आदेश मिलते ही—

गरुडदण्ड, ध्रुव पर टूट पड़ा-
तड़ाक
घड़
खट
लेकिन ध्रुव के एक सटीक दांव ने-
तड़ाक
गरुडदण्ड को उसके जूते के नीचे ला पटका-
ओह! चाल तो अच्छी चली तूने। लेकिन गरुड-दंड को तेरे संसार की कोई भी शक्ति ज्यादा देर तक रोक कर नहीं रख सकती।
मेरे संसार की न सही, लेकिन तुम्हारे संसार की शक्ति तो इस दण्ड को दबा सकती ही होगी। जैसे ये भूमण्डा गदा!
...लेकिन इससे ज्यादा की जरूरत मुझे है भी नहीं।
ध्रुव ने, भूमण्डा गदा को खींचकर गरुडदण्ड को उसके नीचे दबा दिया-
ओह! बड़ी भारी है ये गदा! मैं अपनी पूरी ताकत का इस्तेमाल करके भी इस गदा को जरा सा ही हिला पा रहा हूँ...
ओह! गरुडदण्ड अब कुछ नहीं कर सकता।
लेकिन नागदेव की दाढ़ी से तू बच नहीं सकता...

नागदेव का यह भ्रम जल्दी ही दूर हो गया-

अरे! मेरी दाढ़ी तो इस लड़के को नहीं बांध पाई! उल्टे इसने ही मेरी दाढ़ी में...

ये नागप्रेती तो सचमुच बहुत खतरनाक लग रहा है। ये जो कह रहा है वह कर भी दिखाएगा। इससे बचने का एक ही तरीका है कि मैं नागदेव और नागप्रेती को आपस में ही उलझा दूं!

ध्रुव ने नागदेव की दाढ़ी को नागप्रेती के खुले मुंह में डाल दिया-

★ ज्वार : चंद्रमा के आकर्षण के कारण समुद्र के जल का ऊपर उठना। भाटा : समुद्र के जल का नीचे आना

...तो मैं इस भारी भरकम वजन को लेकर कुछ कदम चलकर...
...समुद्र के पानी तक पहुंच सकता हूं।...
...और ज्वार भाटे के कारण, तेजी से घटता-बढ़ता यह पानी मेरे शरीर पर पुते विषाला के विष को धो डालेगा।
छपाक
और देव कालजयी से प्राप्त शरीर में वास करने वाले विशेष नागफनी सर्प, मेरे शरीर से बाहर आकर...
...मुझे कालसर्पी से छुटकारा दिला देंगे।
शीघ्र ही नागराज आजाद था-
अब मुझे जल्दी से जल्दी नागद्वीप पहुंचकर इस बात का पता लगाना होगा कि आखिरकार नागद्वीप के सारे इच्छाधारी सर्प कहां गए हैं?
नागराज के शरीर से निकले नागफनी सर्प कालसर्पी पर चारों तरफ से टूट पड़े-
और विषाला की विपरीत शक्तियों से युक्त होने के कारण कालसर्पी इस हमले के सामने टिक न सका-

amaancoldude8

लेकिन नागद्वीप में, एक आश्चर्य नागराज का इंतजार कर रहा था–

अरे! यह क्या? मैं नागद्वीप में प्रवेश नहीं कर पा रहा हूं। कोई शक्ति मुझे अन्दर घुसने से रोक रही है!

नागराज भी चूंकि नागद्वीप के लिहाज से बाहरी व्यक्ति था, इसीलिए वेदाचार्य का तिलिस्म उसे भी रोक रहा था–

पसीने-पसीने होने के बाद नागराज को नागद्वीप में घुसने का ख्याल छोड़ ही देना पड़ा–

अब यह कैसे पता चलेगा कि नागद्वीप के सारे नाग कहां गए हैं? एक तरीका है। नागानन्द। मेरे शरीर में वास करने वाले नागों का भूतपूर्व सेनापति। जिसको मैंने नागद्वीप छोड़ते वक्त गुप्त रूप से यहां छोड़ दिया था।★

उससे मानसिक संपर्क करके सारी बातों का पता चल सकता है।...

नागानन्द इस वक्त, तीन जांबाजों से एक साथ जूझ रहा था–

इनमें से तो एक से भी अकेले निबट पाना मुश्किल काम है। फिर ये तीन-तीन हैं। बगैर विषनखों का इस्तेमाल किए काम नहीं चलेगा।

कमांडो कैडेट करीम, पीटर और रेणु से कमांडो फोर्स के हैडक्वार्टर में–

ओह! इसने रेणु को अपने नाखूनों से खरोंच मार दी है। ये नाखून जरूर विषैले होंगे करीम!

इस पर जल्दी काबू पाने की कोशिश करो। वर्ना रेणु को हम अस्पताल नहीं ले जा पाएंगे!

★ पढ़ें : शाकूरा का चक्रव्यूह

पिछले दो मिनट से यही तो कोशिश कर रहा हूं। मैं तो कैमरा ऑटो पर सेट करके अपने तीनों की ग्रुप फोटो खींचने जा रहा था! पता नहीं, ये रंग में भंग कहां से...
...अरे! कैमरा! शायद कैमरा ही हमारी कुछ मदद कर सके!
धड़ाक
कैप्टेन ने हमको यही तो सिखाया है कि लड़ाई में अगर तिनके का इस्तेमाल भी दिमाग लगाकर किया जाए तो वह तलवार से भी ज्यादा खतरनाक साबित होता है...
करीम के लिए अभी काम और आसान होने वाला था-
क्योंकि नागानन्द का दिमाग कहीं और व्यस्त होने वाला था-
नागानन्द! तुम कहां हो?
नागराज! हम बड़ी मुसीबत में हैं! नागराज तुम जहां कहीं भी हो जल्दी से जल्दी राजनगर पहुंच जाओ...
...हम यहां पर... ...ओह!
करीम ने इसी वक्त कैमरे की फ्लैश का बटन दबा दिया-
क्लिक
और तेज रोशनी का झमाका नागानन्द की आंखों में तीर की तरह आ चुभा-
उसकी आंखें कुछ पलों के लिए बेकार हो गई-
और इन पलों में ही पीटर और करीम ने उसको बेदम कर दिया-
तड़ाक
धाड़
घायल नागानन्द के पास सर्प रूप में भागने के अलावा और कोई चारा नहीं बचा था-
लेकिन बीच में ही मानसिक संपर्क टूटने के कारण नागराज थोड़ा चिंतित अवश्य हो गया था-
मुझे जल्दी राजनगर पहुंचाओ मेरे नागो! जरूर कोई बड़ी मुसीबत अपने पंख फैला रही है!

मुसीबत आई तो थी लेकिन इस मुसीबत का शिकार ज्यादा-तर मानव ही बने थे–

भयानक रूप वाले सर्प, हर स्थान पर अपना आतंक फैलाए हुए थे–

लेकिन कुछ स्थानों पर कुछ जांबाज मानव सर्पों का मुकाबला भी कर रहे थे–

अब भी वक्त है। विसर्पी के रास्ते से हट जा। मैं वादा करती हूं कि मैं कोई नुकसान नहीं करूंगी!

पहली बात तो चंडिका किसी के सामने से हटती नहीं। और दूसरी बात कि नुकसान तो तुम कर ही चुकी हो...

...इस मिल के सारे कर्मचारी तुमसे डरकर भाग चुके हैं। काम बन्द होने से लाखों का नुकसान तो हो ही चुका है।

अब रहा तुम्हारा वादा। तो उस पर मुझे भरोसा है नहीं। वैसे भी सांपों का क्या भरोसा?

भरोसा तो जिन्दगी का भी नहीं होता लड़की! मौत का क्या भरोसा?...

...न जाने कब आ जाए?

ओह! यह सर्प रूप में बदलकर मुझको काटने के लिए लपक रही है।... यह फुर्तीली भी बहुत है!

इसकी फुर्ती को कम करना होगा। और यह काम 'पेंट स्प्रे' करेगा।...

...इस स्थिति के लिए मैं तैयार होकर ही आई थी। भला हो टी॰ वी॰ वालों का, जिन्होंने इन नागों के बारे में काफी जानकारी हमको दे दी थी।

फिस्सस

उफ!

मुझे मानवरूप में आना पड़ेगा।

amaancoolude8

ओह! इस लड़की ने मेरी आंखों को पेंट से ढक दिया है। इसको तो मैं अपने विष से साफ कर ही लूंगी। लेकिन इस दौरान इस बात का इंतजाम करना पड़ेगा कि यह मुझ पर हमला न कर सके!

फूऊऊऊऊऊऊऊ

विसर्पी का शरीर, मानवरूप में आकर अपनी एड़ियों पर लट्टू की तरह गोल-गोल नाचने लगा और साथ ही साथ उसके मुंह से विष-फुंकार भी छूटने लगी—

मर गए! इस विषैले वातावरण को पार करके इस तक पहुंच पाना असंभव है।...

...लेकिन फिर भी मुझे अपनी सांस रोककर, इस पर इसी बीच में हमला कर देना होगा!...

...क्योंकि इस समय इसको मुझसे हमले की उम्मीद भी नहीं होगी।...

विसर्पी, इस अचानक हुए वार से लड़खड़ा तो जरूर गई—

लेकिन तुरन्त संभल भी गई-

उई!

करारा वार था! यह नागिन तो जूडो कराटे भी जानती है।...

तड़ाक

...सांप भी आजकल काफी एडवांस हो गए हैं। जूडो-कराटे की कोचिंग करने लगे हैं!...

...यानी अगर ये लड़ाई ज्यादा देर चली तो मेरे पिट जाने की संभावना बढ़ जाएगी!

क्योंकि शारीरिक शक्ति में यह मुझसे दुगुनी या तिगुनी तो है ही!

★ चंडिका, वास्तव में ध्रुव की बहन श्वेता है, जो नए-नए आविष्कार करने के मामले में जीनियस है।

चंडिका की तरह कहीं और ध्रुव भी अपने तरीके से इच्छाधारी सर्पों को रोक रहा था-
सिंहनाग के सामने आकर तूने अपनी जिन्दगी की सबसे बड़ी और आखिरी भूल की है ध्रुव! ...
... क्योंकि सिंहनाग के पंजे का एक ही वार तेरी खोपड़ी को खोल देगा!
जरूर खोल देगा! लेकिन अगर यह मेरी खोपड़ी तक पहुंच पाए तो ...
... उससे पहले मैं तुम्हारा मुंह यह जानने के लिए खुलवा लूंगा, कि आखिर तुम नाग आए कहां से हो? और राजनगर में तोड़-फोड़ क्यों कर रहे हो?
मुझे आभास हो रहा है कि ये नाग शहर के बारे में ज्यादा नहीं जानते हैं। मेरे वार से क्रोधित होकर सिंहनाग अब मुझ पर जरूर कूदेगा! ...
... और उसी पल मैं मेनहोल का ये ढक्कन हटा लूंगा। ...
?
... ताकि सिंहनाग कुछ समय तक 'सीवर भूलभुलैया' की सैर... अरे! यह तो बच गया!
सिंहनाग न सिर्फ गिरने से बचा...

...बल्कि उसने पलक झपकते ध्रुव पर हमला भी कर दिया-
धड़ाक
लेकिन इससे पहले कि सिंहनाद, ध्रुव को कोई नुकसान पहुंचा पाता...
...वह बंधनों में जकड़ गया-
ओह! ये सांप! यानी राजनगर को बचाने आ पहुंचा है...
...नागराज!
यह तुम क्या करने जा रहे थे, सिंहनाद? मेरे सबसे घनिष्ठ मित्र पर वार करने जा रहे थे? क्यों?
मैं बताता हूं नागराज!
नागानन्द! तुमसे मेरा मानसिक संपर्क बीच में ही टूट गया था!...
नागानन्द से घटनाक्रम सुनकर नागराज की आंखें फैलती चली गईं-
और वह स्फटिक अगर अगले कुछ घंटों में न मिला तो नागद्वीप नष्ट हो जाएगा।
इधर आओ नागराज! जो कुछ मैं तुमको बताने वाला हूं वह अत्यन्त गोपनीय है!
इतनी जल्दी स्फटिक ढूंढने के कारण ही हमको यह तरीका अपनाना पड़ रहा है नागराज!
ओह! विषाला से तो मैं भी टकरा चुका हूं!

...वह सचमुच बहुत खतरनाक ही है मैं स्थिति की गंभीरता को समझ रहा हूं।...
...मानवों की इस खोज में कुछ असुविधा जरूर हो रही है, पर जब तक किसी मानव की जान न ली जाए, तब तक मैं इच्छाधारी नागों के साथ हूं!
क्योंकि सिर्फ मानवों की असुविधा के कारण मैं सभी इच्छाधारी नागों की बलि नहीं चढ़ने दे सकता।

और फिर-
अच्छा हुआ तुम वक्त पर आ गए नागराज! अब इन नागों को यह तोड़-फोड़ रोकने का आदेश दो!
मुझे खेद है ध्रुव! मैं ऐसा नहीं कर सकता। बल्कि ये नाग जो कर रहे हैं वह उनको करने दो!...
...वर्ना इन नागों के प्राण संकट में पड़ जाएंगे!
ऐसा क्या हो गया है? मामला क्या है, आखिर यह मुझे भी तो पता चले!
यह मैं तुमको बता सकने में असमर्थ हूं ध्रुव!
...अगर मैंने ध्रुव को स्फटिक के विषय में बताया तो मुझे नागद्वीप का जिक्र भी करना पड़ेगा।...
...और नागद्वीप का जिक्र मैं किसी भी बाहरी व्यक्ति से नहीं कर सकता...
...चाहे वह ध्रुव जैसा सच्चा व्यक्ति ही क्यों न हो!
मैंने राजनगर की रक्षा का व्रत लिया हुआ है नागराज! मैं नागों की तोड़-फोड़ और आतंक फैलाने की इजाजत नहीं दे सकता।
इन भयंकर नागों को रोकने की कोशिश मत करो ध्रुव! वर्ना प्रलय आ जाएगी।
तुम न तो नागों को तोड़-फोड़ करने से रोक रहे हो, और न ही उनके ऐसा करने का कारण बता रहे हो।...
...हम मानवों ने भी चूड़ियाँ नहीं पहन रखी हैं! हम इन नागों को रोककर ही रहेंगे। और ऐसा करने से प्रलय आती है तो आ जाए!

इन नागों को रोकने से पहले तुमको मुझसे टकराना पड़ेगा ध्रुव! नागराज से।...
...और नागराज की सर्प सेना से।
मुझे यह ख्याल आया तो था कि नागराज से कभी न कभी मुझे टकराना पड़ सकता है। परन्तु वह समय इतनी जल्दी आ जाएगा यह मैंने नहीं सोचा था...
...अच्छा हुआ कि मैंने नागराज की शक्ति के काट सोचकर रखे हुए हैं।
225 KM
ध्रुव के होंठों से निकली वह आवाज-
रात के सन्नाटे को चीरती हुई पेड़ों की ऊंची-ऊंची शाखों से जा टकराई-
और उन शाखों पर सो रहे गिद्ध और चील इस पुकार को सुनकर ध्रुव की मदद के लिए उतर आए-
लेकिन नागों की तादाद सैकड़ों में थी, और पक्षियों की दर्जनों में-
नाग आखिरकार ध्रुव को अपने बंधनों में कैद करने में सफल हो ही गए-
अब तुम इन बंधनों से बाहर तभी निकल पाओगे ध्रुव, जब मैं चाहूंगा। तब तक तुम इसी वीराने में आराम करो।
कुछ मिनटों के लिए पक्षियों का पलड़ा भारी रहा-
मेरा चिड़ियों वाला वार कुछ खास काम नहीं आया। नागराज बहुत शक्तिशाली है। मेरा इससे जीत पाना असंभव है।

प्रलय
नागराज की सिर्फ ऐसे किसी हमले द्वारा ही हराया जा सकता है, जिसकी उसे उम्मीद ही न हो!
जैसे आज तक नागबंधनों में बंधने के बावजूद भी...
...किसी ने नागराज पर पलटकर हमला नहीं किया होगा।
नागराज पलभर के लिए चकित रह गया-
लेकिन तुरन्त ही संभल गया-
तुमको रोक सकने का एक ही तरीका है ध्रुव! तुमको बेहोश कर देना।...
ध्रुव नागराज की शक्ति के बारे में अच्छी तरह से जानता था...
...इसीलिए वह नागराज के फुर्तीले वारों से बचने के लिए अपने सारे अनुभव और पूरी फुर्ती का इस्तेमाल कर रहा था-
क्योंकि एक भी सटीक वार ध्रुव के शरीर पर पड़ने का मतलब था, अगले ही पल बेहोशी की दुनिया की सैर-
धस्स

परन्तु नागराज के पास किसी को बेहोशी की दुनिया में पहुंचाने के और भी तरीके थे-
फूऊऊऊ
ओह! विष फुंकार! तो नागराज ने अपना वह वार कर ही दिया, जिसका मुझे डर था। रवीं रवीं!
विष फुंकार का असर होने में सिर्फ एक मिनट का ही समय लगा-
यह तो जल्दी ही बेहोश हो गया। वैसे भी मैंने विष फुंकार की उतनी ही मात्रा का प्रयोग किया था, जो इसे बेहोश कर सके, मार न डाले!
लेकिन फिर भी मैं इसके सर्प बंधनों को नहीं हटाऊंगा ध्रुव के दिमाग का कोई भरोसा नहीं है।
अब जब तक ध्रुव बेहोश है तब तक मैं इच्छाधारी सर्पों की स्फटिक ढूंढने में मदद करूं।
मैं अपने शरीर में वास करने वाले सर्पों को राजनगर में फैला देता हूं। अगर इनकी कहीं पर स्फटिक नजर आ गया तो ये मुझको सूचित कर देंगे!
नागराज अपने शरीर से नागों को निकालने में व्यस्त हो गया-
और उसकी व्यस्तता एक आश्चर्यजनक घटना से टूटी-
अरे! यह क्या?
एक साए ने नागराज के बाजुओं को पकड़कर फुर्ती से मरोड़ दिया-
और कुछ समझ पाने से पहले, नागराज हथकड़ियों में कैद था-
अरे! 'स्टार कफ्स'! यानी... यानी...
... ध्रुव आजाद हो गया है? ठीक समझे नागराज! और इन 'स्टार कफ्स' को तोड़ने की कोशिश मत करना!... इनको तुम्हारी शक्ति को ध्यान में रखते हुए, 'टाईटेनियम धातु' का बनाया गया है!...

...लेकिन तुम तो बेहोश थे। और वह भी सर्प बन्धनों में। फिर तुम आजाद कैसे हो गए?
मैं प्राणायाम के द्वारा पांच मिनट तक सांस रोक सकता हूं नागराज! तुम्हारी विष फुंकार छंटने तक मैं सांस रोके हुए था। और फिर जैसे तुम सर्प छोड़ने के लिए मुड़े...
...मैं पास ही बने स्वीमिंग पूल की तरफ लपक लिया। ये तो जाहिर था कि तुमने मुझे बांधने के लिए किसी भी जल सर्प का इस्तेमाल नहीं किया होगा। इसीलिए स्वीमिंग पूल में डूबते ही सारे सांप तड़पकर मेरे शरीर से अपने-आप अलग हो गए, और मैं आजाद हो गया—
आजाद होते ही मैं अपनी थोड़ी दूर पर ही खड़ी मोटर साइकल से ये 'स्टार कफ्स' और एक दो चीजें और निकाल लाया। जिनको मैंने ऐसे ही मौके के लिए तैयार रखा था।...
...जैसे ये 'बॉन्डेड-टेप' जो तुम्हारे मुंह से विष-फुंकार को निकलने नहीं देगा।
हालांकि मैं जानता हूं कि इनसे तुमको आजाद होने में कुछ ही पलों का समय लगेगा...
...लेकिन उतनी देर में मैं सिंहनाग को ढूंढकर काबू में कर लूंगा।
लेकिन तभी- सिंहनाग की तलाश में बढ़ते ध्रुव के कदम, एक आवाज सुनकर ठिठक गए—
?
अरे! ये विषंधर ने हमें कहां फंसा दिया? स्फटिक चुराकर छुपाया भी तो ऐसी खतरनाक जगह पर!...

...कहीं और छिपाता तो न तो हम उस लड़के से टकराते और न ही इस मुसीबत में फंसते।
अरे! तेरा क्या जा रहा है? (गडब) मुसीबत में तो मैं हूं। (गटक) एक तो तेरी दाढ़ी का स्वाद बहुत खराब है और दूसरे इसको खाते-खाते मेरा पेट फटा जा रहा है।
ध्रुव के दिमाग में बिजली सी कौंध गई-
विषंधर? और स्फटिक? यह तो वही नाग जैसा आदमी लगता है, जिससे मैं कल रात टकराया था।
उसके हाथ में एक स्फटिक जैसी मणि भी थी।...
...कहीं ये नाग उसी को तो नहीं ढूंढ रहे हैं? मुझे तुरन्त उस मणि को ढूंढ कर लाना होगा क्योंकि अगर नागों को वह मणि चाहिए...
...तो मणि मेरे पास होने की स्थिति में ये मेरी बात मानने को विवश हो जाएंगे। और मैं राजनगर में फैल रहे आतंक को खत्म कर पाऊंगा।
नागराज की तीक्ष्ण दृष्टि से यह दृश्य बच नहीं सका-
यह क्या? ध्रुव तो सिंहनाग की विपरीत दिशा में जा रहा है। जरूर इसके दिमाग में कोई नई योजना आ गई है जो नागों के लिए खतरनाक हो सकती है। मुझे इसके पीछे जाना चाहिए।
और उसके लिए मुझे तुरन्त इन बन्धनों से आजाद होना पड़ेगा। यह काम मैं सर्प रूप में आकर ही कर सकता हूं।
इच्छाधारी शक्ति ने नागराज को उसके बंधनों से मुक्त कर दिया-
और नागराज फिर से अपने वास्तविक रूप में आकर ध्रुव के पीछे लग गया-
एक अधूरी लड़ाई को अंजाम तक पहुंचाने के लिए-

amarcomics.de

और इसी वक्त- नागद्वीप में भी एक अधूरा काम पूरा किया जा रहा था-

और यही पता करने मैं नागद्वीप की तरफ आ रहा था!

ओह! यानी जिस शिशु को देव कालजयी ने नागद्वीप पर लाने का आदेश दिया था, और जो चालीस वर्ष तक नागद्वीप में सुषुप्तावस्था में रहा, वह नागराज ही था।

हां, मान्यवर! मेरी और आपकी जानकारी मिलाकर तो यही निष्कर्ष निकलता है।

यह तो एक बड़ी दुविधा का कारण हो गया है, वृद्धवर! नागराज के द्वारा नागद्वीप का सम्राट बनने के प्रस्ताव को ठुकरा देने से नागद्वीप की जनता नागराज से क्रुद्ध है...

... परन्तु यह रहस्य जानकर और यह जानकर कि नागराज देव कालजयी के आशीर्वाद से उत्पन्न हुआ है। सारे नाग नागराज को सम्राट मानने के लिए विवश हो सकते हैं।

वैसे भी सभी यह जानते हैं कि विसर्पी के पिता महाराज मणिराज उस शिशु को गोद लेकर वारिस बनाना चाहते थे।...

... इसीलिए इस समस्या से बचने का एक ही तरीका है कि फिलहाल ये बात किसी को भी न बताई जाए... नागराज को भी नहीं!

वैसे तो नागराज हर प्रकार से नागद्वीप सम्राट बनने के योग्य है, पर वह यहां पर रहना नहीं चाहता।

और यही नागों के असंतोष का कारण है। नागराज को पहले नागों का दिल जीतना होगा... और इसमें नागराज की मदद मैं करूंगा!

सबसे पहले मैं नागराज को नागद्वीप पर आने-जाने की इजाजत दे दूंगा। ताकि वह अन्य इच्छाधारी सांपों के साथ घुल-मिलकर उनके दिलों में जगह बना सके।

बाकी काम नागराज को स्वयं ही करना होगा। और तब तक यह रहस्य हमारे बीच में ही रहेगा।

ध्रुव इस दौरान स्फटिक की तलाश में समुद्र का पानी छान रहा था-
मुझे वह जगह ठीक से याद नहीं है, जहां पर स्फटिक गिरा था, लेकिन इस डॉल्फिन को वह जगह जरूर याद होगी।...
...और यही मुझे उस स्थान तक लेकर जाएगी।
डॉल्फिन ने ध्रुव को धोखा नहीं दिया-
आहा! यही है वह चट्टानों का समूह, जहां पर स्फटिक गिरा था। और जहां से विषंधर गायब हो गया था। स्फटिक यहीं कहीं पर होगा।
और रात के अंधेरे में स्फटिक की चमक की मदद से उसको ढूंढना कोई मुश्किल काम नहीं होना चाहिए।
और अगले ही पल- उसका पूरा बदन ही हवा में उड़ गया-
कड़ड़
कड़
ध्रुव को स्फटिक ढूंढने में ज्यादा वक्त नहीं लगा-
यह रहा वह स्फटिक!
ध्रुव ने स्फटिक को उठाने के लिए हाथ बढ़ाया-
तूने स्फटिक को नहीं, अपनी मौत को ढूंढ निकाला है लड़के!

आह! तुम कौन हो? और ये स्फटिक ले जाने से मुझे रोकना क्यों चाहती हो?
तेरी मौत की देवी विषाला कहते हैं लड़के! और यह स्फटिक मेरी संपत्ति है। इसको यहां से कोई नहीं ले जा सकता!
परन्तु अगर मैं यह स्फटिक, राजनगर न ले गया तो शायद मेरा शहर तबाह हो जायगा।
तू यह चिन्ता... क्योंकि मैं तुझे वैसे छोड़ दूं लड़के!... भी जिन्दा वापस नहीं जाने दूंगी!
कड़ाक
...ताकि तू किसी को आकर यह बता तक न सके कि स्फटिक कहां पर है!
तू समझ नहीं पा रहा है मानव कि तू किससे बात कर रहा है। विषाला अगर जोर से सांस भी छोड़ दे तो सैकड़ों मानव प्राण त्याग देंगे।...
...तू मरेगा तो अवश्य! परन्तु तुझे मारने में मैं अपनी कीमती तंत्र शक्ति व्यर्थ नहीं करना चाहती। इसकी मुझे आवश्यकता पड़ सकती है।
तुम्हारी इस बात से मुझे शक हो रहा है कि यह स्फटिक तुम्हारा है। क्योंकि अगर यह स्फटिक तुम्हारा ही होता तो तुम चोरों की तरह यहां पर छिपीन बैठी होती...
...और राजनगर में घूम रहे तमाम नाग इसी स्फटिक की खोज में भटक न रहे होते!
यह स्फटिक लेकर मेरे साथ नागों के पास चलो। एक पल में सारा फैसला हो जायगा।
जा! मैंने तुझे अपने...

...श्वानदंश के हवाले किया!...
मेरी बलिवेदी की रखवाली करता था यह प्राणी! और आज तक इसने इच्छाधारी सर्पों के अलावा मानव शरीर का स्वाद ही नहीं चखा!
आज मैं इसे इसकी वफादारी का इनाम में दूंगी मानव मांस का स्वाद!
भारी पंजे के एक ही वार ने पहले से ही चोटखाए ध्रुव को नीचे ला पटका-
गर्रर्र
अगला वार ध्रुव ने फुर्ती से बचाया-
और साथ ही साथ हमला भी कर दिया-
श्वान दंश पल भर के लिए चकरा गया। और इसी पल के दौरान-
ध्रुव ने श्वान दंश की गर्दन को जकड़ लिया-

लेकिन ध्रुव श्वान दंश की गर्दन को इतनी देर तक नहीं दबाए रख सका कि उसका दम घोंट सके-

क्यांऊं

मुझे इसको काटने से रोकना होगा। क्योंकि मुझे सौ प्रतिशत यकीन है कि सांपों की तरह इसके दांतों में भी विष होगा।...

...लेकिन मैं इससे बचूंगा भी कब तक? देर-सवेर तो यह मुझको काट ही खाएगा। इसको रोकने का कोई तो तरीका होगा... है... यह डॉल्फिन!

डॉल्फिन, ध्रुव की बात तुरन्त समझ गई-

और अगले ही पल- डॉल्फिन के मुंह से निकली अल्ट्रासोनिक सीटी श्वान दंश के कानों से होती हुई उसके दिमाग में नश्तर की तरह चुभने लगी-

और श्वान दंश चीख उठा। उसके सोचने-समझने की क्षमता गुम हो गई। और उसी पल ध्रुव चीख उठा-

स्टार लाईन श्वान दंश की गर्दन से आ लिपटी-
क्यांऊ
कड़क
और एक तगड़ी किक से श्वान दंश का शरीर हवा में झूल गया-
विषाला यह अनहोनी देखकर पागल हो उठी-
श्वान दंश तुझे नहीं खा पाया, बल्कि उल्टे तूने ही श्वान दंश को खत्म कर दिया। तू तो इच्छाधारी नागों से भी ज्यादा खतरनाक है। अब मैं तुझे बचने का कोई मौका नहीं दूंगी।...
फ़ऊऊ
विषाला ने अपनी विष की एक भयंकर फुंकार ध्रुव पर छोड़ दी। जो सैकड़ों लोगों को मारने के लिए प्रर्याप्त थी-
लेकिन शायद ध्रुव की जीवन रेखा अभी शेष थी। फुंकार ध्रुव तक पहुंचने से पहले ही रोक दी गई-
यह क्या? यहां पर मेरी मदद करने कौन आ रहा है?

आने वाले को देखकर दोनों के ही मुंह से एक ही बात निकली-
नागराज! शुक्र है भगवान का कि तुम मेरी हथकड़ियों से जल्दी आजाद हो गए। वर्ना मेरी आत्मा इस शरीर से आजाद हो चुकी होती!
नागराज! तू मेरी कैद से कैसे आजाद हो गया? और… और फिर यहां तक कैसे पहुंच गया?
आजाद कैसे हो गया, ये तो जाने दो विषाला!…
… लेकिन यहां तक मैं इसलिए पहुंच पाया क्योंकि शायद ऊपर वाले ने तेरी मौत मेरे हाथों में लिखी है।
तेरे शरीर में आम सर्पों के विष का विपरीत विष है। आज मैं तेरे सारे जहर को अपने पूरे जहर का इस्तेमाल करके काट दूंगा।
चाहे इसमें मेरी जान ही क्यों न चली जाए!
जान तो तेरी भी जाएगी नागराज, और इस लड़के की भी।…
… क्योंकि विषाला का सिर्फ विष ही नहीं बल्कि उसकी शक्तियां भी तुम्हारी शक्तियों के विपरीत हैं…

★ ऋण : निगेटिव * तड़ित चालक : ऊंची ईमारतों में लगी लोहे की नुकीली छड जिनका एक सिरा जमीन में धंसा होता है, और दूसरा ईमारत की छत पर लगा होता है। बिजली गिरने की स्थिति में नुकीला सिरा बिजली को ग्रहण करके पृथ्वी मे पहुंचा देता है।

amarcomicsdb

बिजलियों का रुख मुड़ते ही बाकी का काम नागराज के नागों के विष ने कर दिया-

आऽऽऽ ह! इस विष से तो जलन हो रही है!

मेरा विष तेरे विष का विपरीत भी है, और भयंकरता में तेरे विष से कम नहीं है। तूने एक इच्छाधारी गद्दार नाग विषंधर की मदद से अमर-स्फटिक को तो उठवा लिया, पर उसे तू यहां से लेकर जा नहीं पाएगी...

... यह तो अच्छा हुआ कि मैं ध्रुव का पीछा करते-करते यहां तक आ गया। मुझे तो स्वप्न में भी उम्मीद नहीं थी कि तू मुझे यहां पर मिल जाएगी!

... इसके प्रयोग से मेरे शरीर में विष की मात्रा एकाएक काफी कम हो जाती है, और मेरे सूक्ष्म सर्पों के लिए खतरा पैदा हो जाता है। पर इसका प्रयोग मैं तुझ पर करूंगा...

नागराज की इस हरकत से विषाला का क्रोध उबल पड़ा-
आह! तेरे वार विषाला को कमजोर तो कर सकते हैं, पर मार नहीं सकते नागराज...
...लेकिन विषाला का अगला वार तुम दोनों की जान लेकर ही छोड़ेगा।...
...अब मेरे शरीर में इच्छाधारी शक्ति की मात्रा धीरे-धीरे सामान्य हो रही है। और जिस फंदे से कालदूत नहीं बच सका, उससे तुम दोनों कैसे बचोगे!
आह!
ओह! यह क्या?
विषाला के शिकंजे ध्रुव और नागराज की गर्दनों पर कसने लगे। ध्रुव की शक्ति तो वैसे भी फंदे को खोल नहीं सकती थी-
और नागराज के शरीर के रक्त में ज़हर की मात्रा एकाएक कम होने के कारण सूक्ष्म सर्प भारी मात्रा में समाप्त हो गए थे। और इसके कारण नागराज को काफी कमजोरी महसूस हो रही थी-

आंखें के डले बाहर उबल पड़ने को बेताब हो रहे थे-
और सांस न तो फेफड़ों के अन्दर जा पा रही थी और न ही बाहर आ पा रही थी-
मौत चन्द पलों की दूरी पर इन्तजार कर रही थी-
अब मैं तुम दोनों को वैसे ही मारूंगी, जैसे श्वान-दंश मरा था।
लेकिन तभी विषाला चीख उठी। उसका पूरा बदन थरथरा उठा। और शिकंजे खुल गए-
यह क्या?
एकाएक विषाला को क्या हो गया?
आ
हो नहीं गया है, बल्कि कर दिया गया है।
तुम्हारी बहन श्वेता द्वारा बनाए गए इस 'नर्व डिस्रप्टर' के द्वारा!
चंडिका!
कमाल है। तुम ऐन समय पर यहां कैसे पहुंच गई?

मैंने यमराज को इस तरफ आते देखा था। सोचा कि देखूं किसके प्राण हरने जा रहे हैं यमराज! बस पीछा करते-करते यहां तक आ गई।...

...अब मैं भइया को यह नहीं बता सकती न कि मैंने बहुत पहले उनकी बेल्ट पर एक माइक्रो ट्रांसमीटर चिपकाया था, जो अब तक फर्स्ट क्लास काम कर रहा था।

उसी के सिग्नलों का पीछा करते-करते मैं यहां तक यह देखने आ गई थी कि भइया किसी मुसीबत में तो नहीं हैं।

अब कम से कम थैंक्यू तो बोल दो!

मैंने तुम लोगों की जान बचाई तो बचाई, साथ में तुम्हारी मुसीबत को बेबस भी कर दिया है!

बेबस तो अब तू होगी लडकी...

...और तेरे साथ ये दोनों भी! तेरी जादुई तरंगों के वार को मैं इसलिए नही सह पाई, क्योंकि वह वार अचानक हुआ था।

अब मैं तेरी तरंगों को सह सकती हूं। लेकिन मेरा वार अब तुम लोगों को न तो जीने देगा, और न ही मरने देगा।

अरे! अरे! इसका शरीर तो आग की लपटों में घिर रहा है!

मेरे शरीर में आग नहीं लग रही है, बल्कि ये आग मेरे शरीर के अन्दर से हर रोमछिद्र से बाहर निकल रही है।

विषाला अब एक ज्वालामुखी बन गई है। जिसका कहर तुम तीनों को जलाकर राख कर देगा।

बचो!

ओह! मेरा नर्व-डिस्टर्' तो गया!

amarcomics.de

इधर नागराज ने विषाला का ध्यान अपनी तरफ खींचकर मौत को दावत दी-

कड़क

और उसी पल ध्रुव- गर्म और पिघली चट्टानों की परवाह किए बगैर दूसरी तरफ बढ़ गया-

वहां पर, जहां पर पड़ा हुआ था-

अमर स्फटिक-

ओह! यह स्फटिक टूटा तो नहीं, लेकिन यह बहुत गर्म हो गया है। मेरा हाथ झुलस जाएगा, लेकिन फिर भी... मैं इसको उठाकर रहूंगा।...

लेकिन उस एक पल में वह कुछ नहीं कर सकती थी-

'अमर स्फटिक' उसके शरीर से टकरा गया-

... क्योंकि सिर्फ यही विषाला को रोक सकता है।

विषाला को सिर्फ एक पल पहले ध्रुव की मंशा का आभास हुआ-

यह कैसे हो गया? विशाला गायब हो गई? पर...पर यह तुमने कैसे समझ लिया ध्रुव कि स्फटिक के स्पर्श से विशाला गायब हो सकती है?

यह मुझे नहीं पता था नागराज कि विशाला गायब हो जाएगी। पर इतना जरूर पता था कि स्फटिक के स्पर्श से विशाला को कुछ नुकसान अवश्य हो सकता है। तुम्हारी बातों से मुझे यह पता लग गया था कि विषंधर नागद्वीप का नाग था, और मैं यह जानता था कि स्फटिक को वही उठाकर यहां तक लाया है।...

...क्योंकि विषंधर ने यहां पर स्फटिक को मुझसे मुठभेड़ होने के बाद ही गिराया था। इसीलिए मुझे स्फटिक की स्थिति का पता था। नागदेव और नागप्रेती की बातों से मुझे आभास हो गया था कि नाग शायद यहीं स्फटिक ढूंढने नागद्वीप से आए हैं।...

एक बात और...तुम्हारी बातों से मुझे यह भी पता चल गया था कि विशाला में विपरीत यानी निगेटिव शक्तियां हैं।...

...इसीलिए जब तुमने राजनगर जाकर नागों को लाने की बात की, और मैंने इतनी देर में विशाला द्वारा स्फटिक को कहीं और ले जाने की चिन्ता जताई तो मुझे ध्यान आया कि अगर विशाला स्फटिक को कहीं और ले जा सकती तो बहुत पहले ले जाती। नागों के इतनी पास आ जाने के बावजूद भी वह यहां बैठी नहीं रहती।...

...मैंने यह भी सोचा कि स्फटिक भी उसने खुद नहीं, बल्कि विषंधर के हाथों कहीं भिजवाया था। इतनी कीमती चीज दूसरे के हाथ में दे देने का एक ही स्पष्ट अर्थ हो सकता था, कि स्फटिक का स्पर्श भी विशाला के लिए घातक था। बस यही सोचकर मैंने उसका स्पर्श स्फटिक से करवा दिया, और नतीजा तो तुम जानते ही हो।...

वाह ध्रुव! मैं नागानन्द को मानसिक संकेत भेजकर सब नागों को यहीं पर बुलाकर उनको स्फटिक सौंप देता हूं।

और फिर स्फटिक खोने और मिलने से संबंधित सारी कहानी सिर्फ यही तीनों सही-सही जानते हैं। इसीलिए मैं चाहती थी कि आप इनके ही मुंह से सारी कहानी स्वयं सुन लें।...

वह तो मैंने सुन ली विसर्पी। अब मुझे इनका धन्यवाद अदा करना है। नागद्वीप को बचाने के लिए!

उसकी आवश्यकता कतई नहीं है महात्मन! हमें शर्मिन्दा न करें।...

...हम सिर्फ इतना जानने को उत्सुक हैं कि विषाला है कौन? और उसका स्फटिक से क्या संबंध है?

विषाला को तुम मेरा विपरीत रूप कह सकते हो नागराज!

हजारों वर्ष पुरानी बात है। जब मानवों ने इतनी प्रगति नहीं की थी, परन्तु नागों की प्रजातियाँ संख्या में बढ़ती जा रही थीं। उनमें से ही एक प्रजाति ऐसे सर्पों की थी, जिनमें विपरीत विष था। स्वभाव से वे दबंग प्रकृति के और लड़ाकू सर्प थे। वे मानवों से बहुत चिढ़ते थे। और पृथ्वी के मानवों का विनाश करके स्वयं पृथ्वी पर राज करना चाहते थे। विषाला उन क्रूर सर्पों की महानागिन थी। यानी महारानी...

...तब तक मेरी ख्याति एक महान योद्धा के रूप में चारों तरफ फैल चुकी थी... और तब एक दिन महानागिन विषाला मुझसे मिलने आई...
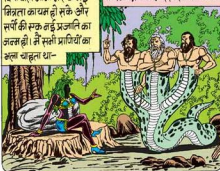
हमारी रीति के अनुसार, मैंने विषाला से विवाह पूर्व का उपहार मांगने को कहा। उसने गहरे समुद्र के अंदर स्थित एक जीवित ज्वालामुखी में रखे एक स्फटिक की मांग की। उसके अनुसार उसको कोई भी योद्धा उस स्फटिक को लाने में सफल नहीं हो पाया था–

anandbooks

उसके बाद मैंने सोचा कि मानवों और सर्पों को अलग-अलग रखना आवश्यक है। वर्ना कभी न कभी युद्ध होकर ही रहेगा। इसीलिए मैं स्फटिक लेकर जगह-जगह भटकता रहा। और अन्ततः इस द्वीप को चुनकर यहां पर इच्छाधारी नागों की बस्ती बसाई... बस... यही है मेरा और विषाला की दुश्मनी का कारण!

महात्मा, बाकी सब कुछ तो ठीक हो गया। अब हमको भी बचा लीजिए!

हा हा हा! अभी बचाता हूं!

महात्मा! महात्मा!

यह कौन है?

हा हा हा! तुमने नागप्रेती और नागदेव को पूरी तरह से विवश कर दिया है ध्रुव! तुम सचमुच विलक्षण मानव हो! इनको बचाने के बाद मैं तुमको नागराज, चंडिका और वेदाचार्य के साथ अपनी योग शक्ति से अपने-अपने स्थानों पर भेज दूंगा।

परन्तु मुझे अभी वेदाचार्य से यह पूछना शेष है कि वे यहां पर कैसे आए और क्यों आए?

हा हा हा!

समाप्त.